© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 09 , Issue : 04 | July - September 2023

विश्व शांति पर गांधी के विचारों की प्रासंगिकता

डॉ. नीलम चौरे
एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग
महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय
चित्रकूट, सतना

मनोज
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग
महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय
चित्रकूट, सतना

सारांश

वैश्विक शांति एक सापेक्ष शब्द है। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अनुशासन में, इसे किसी भी देश के संप्रभु क्षेत्राधिकार के बाहर किसी भी प्रकार के सैन्य खतरे की अनुपस्थिति के रूप में परिभाषित किया गया है। यह दुनिया भर के सभी देशों के बीच सहयोग और समझ को भी दर्शाता है ताकि लोग शांतिपूर्ण वातावरण में न्यूनतम जीवन स्तर का आनंद उठा सकें। बीसवीं शताब्दी के दौरान कई विचार धाराएँ उभरी हैं जो वैश्विक शांति और सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न साधनों पर ध्यान केंद्रित करती हैं। वैश्विक शांति का गांधीवादी मॉडल व्यवहार्य विकल्पों में से एक है। समकालीन अन्यायपूर्ण वैश्विक व्यवस्था की पृष्ठभूमि में, पेपर इक्कीसवीं सदी में वैश्विक शांति को बढ़ावा देने के लिए गांधीवादी दर्शन की प्रासंगिकता और महत्व पर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास करता है।

परिचय

महात्मा गांधी विश्व शांति और अहिंसा के प्रबंधक थे और उन्होंने अपनी जीवनशैली और विचारधारा के माध्यम से विश्व शांति की अनुमोदना की है। उनकी विचारधारा विश्वव्यापी थी और आज भी विश्वव्यापी रूप से मान्यता प्राप्त है।गांधी ने विश्व शांति को सबसे बड़ी आवश्यकता बताया था। उन्होंने कहा था कि जब तक हम अपनी अहंकार और स्वार्थपरता से दूर नहीं होते, हम विश्व शांति की ओर अग्रसर नहीं हो सकते। उन्होंने अहिंसा का भी उल्लेख किया था जिसे वे विश्व शांति के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण मानते थे। उन्होंने कहा था कि अहिंसा एक शक्तिशाली तंत्र है, जो समस्त जीवों के सम्बन्धों में सुधार ला सकता है और उन्हें एक-दूसरे के साथ सहमति में जीने की समझ दे सकता है।

गांधी ने संघर्ष के बिना विश्व शांति की अवधि को सम्भव नहीं माना था। उन्होंने कहा था कि सत्याग्रह के माध्यम से, अर्थात सच्चाई के लिए लड़ाई करने के माध्यम से , हम अपने देश और विश्व के लिए सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं। गांधी ने इस बात को भी बताया था कि विश्व शांति के लिए हमें एक नए जीवनशैली की आवश्यकता है जो अहिंसा, संतुलन और संयम के आधार पर अधिक उत्तम हो।उन्होंने भी बताया था कि विश्व शांति के लिए हमें अपने देशों के साथ दूसरे देशों के साथ सुझबूझ करना आवश्यक है। उन्होंने कहा था कि देशों के बीच भाईचारे का भाव होना चाहिए और उन्हें एक-दूसरे के साथ समझौते करने की क्षमता होनी चाहिए।गांधी जैसे महापुरुषों के विचार विश्व के लिए एक मार्गदर्शक बने हुए हैं और वे विश्व शांति के लिए एक महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। उनके विचारों का प्रभाव

ISSN : 2454 – 308X | Volume : 09 , Issue : 04 | July - September 2023

आज भी विश्वव्यापी है और यह भविष्य में भी सुनिश्चित है कि विश्व शांति के लिए उनकी विचारधारा से लाभ होगा।

गांधी ने विश्व शांति के लिए एक नयी विश्वव्यापी नीति का प्रस्ताव भी किया था, जिसे "सत्याग्रह अभ्यास" कहा जाता है। इस नीति के अनुसार, विश्व के लोगों को अहिंसा, संयम और समझौते के माध्यम से अपने अंतरंग बदलाव लाने के लिए तैयार होना चाहिए। इस तरीके से वे स्वयं बदल जाते हैं और अपने आस-पास के लोगों में भी बदलाव लाते हैं। इस नीति के अनुसार, सत्याग्रह के माध्यम से संघर्ष करने के बजाय, लोगों को समस्याओं के समाधान के लिए एक साथ काम करना चाहिए।गांधी ने भी इस बात को बताया था कि विश्व शांति के लिए हमें वैश्विक एकता का समर्थन करना चाहिए। उन्होंने कहा था कि हम सभी मानव हैं और हमें एक-दूसरे के साथ बराबरी और सम्मान में रहना चाहिए। उन्होंने यह भी संकेत दिया था कि विश्व शांति के लिए हमें अपनी अंतर्निहित संघर्षों को छोड़ना चाहिए और एक-दूसरे के साथ सहयोग करना चाहिए।

चार विचारधाराएँ प्रमुख रही हैं

- उदारवाद;
- यथार्थवाद;
- समाजवाद
- गांधीवाद

उदारवाद:

प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद, उदार अंतर्राष्ट्रीयतावाद के नाम पर एक स्कूल का उदय हुआ। इस विचार का समर्थन अमेरिकी राष्ट्रपति वुडरो विल्सन ने किया था। उदारवादी अंतरराष्ट्रीयतावाद ने 1914 में जो गलत हुआ उसका दो भाग निदान और भविष्य में इसी तरह की आपदा से बचने के लिए इसी तरह के दोहरे नुस्खे पेश किए। पहला नुस्खा किसी राष्ट्र के घरेलू वातावरण की ओर निर्देशित है। यह तर्क दिया जाता है कि आम तौर पर लोग युद्ध नहीं चाहते हैं। युद्ध इसलिए होता है क्योंकि लोग इसमें सैन्यवादियों या निरंकुशों के नेतृत्व में होते हैं। इसलिए, राष्ट्रीय आत्मनिर्णय के सिद्धांतों के आधार पर उदार लोकतांत्रिक संवैधानिक व्यवस्था को बढ़ावा देना आवश्यक है। इसके पीछे तर्क यह है कि यदि सभी शासनों को उदार लोकतांत्रिक प्रणाली में परिवर्तित कर दिया जाए तो भविष्य में कोई युद्ध नहीं होगा। उदार अंतर्राष्ट्रीयवाद का दूसरा घटक 1914 से पहले के अंतरराष्ट्रीय संस्थागत ढांचे को लक्षित करता है। 1914 से पहले की अराजक अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था ने वैश्विक शांति की संभावनाओं को कमजोर कर दिया। विभिन्न नेताओं द्वारा लिए गए निर्णयों को संसदों या विधानसभाओं द्वारा अनुमोदित नहीं किया गया था। युद्ध को रोकने के लिए कोई तंत्र नहीं थे। इसलिए ऐसी किसी भी घटना से निपटने के लिए नए संस्थागत ढांचे के विकास की आवश्यकता थी। राष्ट्र संघ अंतिम उत्पाद था।

© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 09 , Issue : 04 | July - September 2023

उदार अंतर्राष्ट्रीयवादियों का तर्क है कि लोगों की वास्तविक रुचि और शांति की इच्छा है। लोकतांत्रिक व्यवस्था इन हितों और इच्छाओं को हावी होने देगी। हालांकि जल्द ही उदारवादी अंतर्राष्ट्रीयवादी स्कूल को ई.एच. कैर द्वारा प्रतिनिधित्व करने वाले एक अन्य स्कूल द्वारा चुनौती दी गई।

यथार्थवाद:

यह सिद्धांत तर्क देता है कि अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली प्रकृति में अराजक है। संप्रभु राज्यों का एक समाज मौजूद है, जिनमें से प्रत्येक अपने राष्ट्रीय हितों को संरक्षित करना चाहता है। न्याय की अपेक्षा व्यवस्था पर अधिक बल दिया जाता है। शक्ति संतुलन के सिद्धांतों पर आधारित राष्ट्रों के पदानुक्रम को आदर्श क्रम के रूप में देखा जाता है। यथार्थवादियों का तर्क है कि शक्ति संतुलन संघर्षों को कम करेगा और सत्ता में असमानताओं का प्रबंधन करेगा। अन्य राज्यों के मामलों में हस्तक्षेप तब तक उचित नहीं है जब तक कि यह हस्तक्षेप करने वाले राज्य के अस्तित्व के लिए आवश्यक न हो। दूसरे शब्दों में, राष्ट्र राज्य प्रणाली सबसे अच्छा विकल्प है क्योंकि यह अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बनाए रखने में मदद करती है।

समाजवाद:

समाजवादी समानता को संरचनात्मक दृष्टि से देखते हैं। उनका सरोकार न केवल घरेलू समानता से है, बल्कि पूरे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर समानता से है। समाजवादी समानता को बढ़ावा देने के लिए बड़ी संख्या में समाजवादी समुदायों पर आधारित वैश्विक संगठन की आशा करते हैं। उनके अनुसार समाजवाद एक सार्वभौम सिद्धांत है। इसलिए, राष्ट्रवाद समाजवादी आदर्श का उल्लंघन करता है। समाजवादी क्रांति के आयोजन के माध्यम से दुनिया को एक समाजवादी समाज में बदलने की जरूरत है जो वस्तुतः वैश्विक शांति और सुरक्षा सुनिश्चित करेगी।

गांधीवाद:

चौथा विकल्प: गांधी ने खुद को वैश्विक समस्याओं के बारे में ज्यादा चिंतित नहीं किया। हालांकि, अंतरराष्ट्रीय मामलों के बारे में उन्होंने कभी-कभार की गई टिप्पणियों के साथ-साथ अपने निहितार्थों का विस्तार भी कियाघरेलू संदर्भ में उनके कथन से काफी स्पष्ट वैश्विक व्यवस्था का पता चलता है जिसका उन्होंने अनुमान लगाया था।

गांधीवादी विश्व व्यवस्था का उद्देश्य अनिवार्य रूप से शांति की संस्कृति विकसित करना है, जिससे मनुष्य आक्रामकता पर अंकुश लगा सके और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति या कम से कम गैर-सैन्य वैश्विक प्रतिस्पर्धा की नीति का पालन करने के लिए तैयार हो सके। गांधी ने अंतरराष्ट्रीय संबंधों की अनसुलझी समस्याओं पर ध्यान केंद्रित किया। उनके लिए, युद्ध 'अधर्म' था क्योंकि यह अहिंसा के सिद्धांतों और धर्म के उच्च कानून का खंडन करता था। गांधी युद्ध को अल्पसंख्यकों की रचना मानते थे, जो अपनी इच्छा बहुसंख्यकों पर थोपने का प्रयास करते थे। मनुष्य, गांधी के अनुसार, स्वभाव से अहिंसक हैं। अगर वे हिंसक होते, जैसा कि कुछ राजनीतिक विचारकों ने अनुमान लगाया है, तो उनके लिए आज तक जीवित रहना मुश्किल होता। इसलिए गांधी ने किसी भी मानवीय संबंधों में किसी भी

रूप में हिंसा के उपयोग की एकतरफा अस्वीकृति पर जोर दिया। उन्होंने सभी विवादों - पारस्परिक या अंतर्राष्ट्रीय - को निपटाने के लिए नैतिक साधन निर्धारित किए। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, गांधी ने इंग्लैंड को हिटलर से हथियारों से नहीं लड़ने की सलाह दी, बल्कि उन्होंने अंतरराष्ट्रीय संबंधों में सत्याग्रह के उपयोग का आग्रह किया। गांधी के अनुसार, स्वतंत्र भारत एक माध्यम के रूप में कार्य करेगा जिसके माध्यम से 'अंतर्राष्ट्रीय संबंधों' को नैतिक आधार पर रखा जाएगा। उन्होंने आगे कहा कि प्रशांत साधनों द्वारा भारत की मुक्ति 'सबसे बड़ा योगदान होगा जो किसी एक राष्ट्र ने विश्व शांति के लिए किया होगा।'

गांधी के लिए, हिंसा हिंसा को जन्म देती है। उनका दृढ़ विश्वास था कि हिंसा को हिंसा से नहीं हटाया जा सकता, इसे केवल अहिंसा से हटाया जा सकता है। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की वर्तमान हिंसक प्रकृति को ध्यान में रखते हुए, जो प्रासंगिक खोज उत्पन्न होती है वह यह है- कोई देश अहिंसक मार्ग का पालन कैसे करेगा जब वह जानता है कि वह दुश्मनों से घिरा हुआ है? गांधी के अनुसार, कोई दुश्मन नहीं है, केवल विरोधी ही हो सकते हैं जिन्हें आत्मिक बल से जीता जा सकता है, पाशविक बल से नहीं।

गौतम बुद्ध ने अहिंसा और करुणा के संदेश का प्रचार किया। सबसे महान सम्राटों में से एक, अशोक ने युद्धों को छोड़कर बुद्ध की शिक्षाओं का पालन किया था और कलिंग प्रकरण के बाद शांति के मार्ग का अनुसरण किया था। भगवान महावीर और ईसा मसीह ने प्रेम, क्षमा और शांति का संदेश दिया। बीसवीं शताब्दी के दौरान, गांधी ने हिंसा के खिलाफ अहिंसा की प्रभावकारिता की आवाज उठाई। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय विवादों को निपटाने के लिए नैतिक साधनों का प्रचार किया। उन्होंने यह प्रयोग दक्षिण अफ्रीका और भारत में इस उम्मीद में किया था कि उन्होंने जो उदाहरण प्रस्तुत किया वह पूरी दुनिया को अनुसरण करने के लिए प्रेरित करेगा। गांधी की भारत की स्वतंत्रता की अवधारणा की वैश्विक प्रासंगिकता इस अर्थ में थी कि वे चाहते थे कि स्वतंत्र भारत मानव कल्याण और वैश्विक शांति का साधन बने।

शांति की अनुपस्थिति सामाजिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में तनाव का कारण और प्रभाव दोनों है। यह आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति और मानवीय एकजुटता के सभी प्रयासों को विफल कर देता है। शांति लोगों को जोड़ने वाली एक सकारात्मक शक्ति है। युद्ध जो एक विभाजनकारी शक्ति है, कभी भी वैश्विक शांति को बढ़ावा देने में योगदान नहीं दे सकता है। इसलिए, गांधी के अनुसार, शांति की खोज अकेले अहिंसा के मार्ग में होनी चाहिए। गांधी ने वास्तव में संघर्षों के अहिंसात्मक समाधान और विश्व शांति की स्थापना के लिए लाखों लोगों को लामबंद करने की सलाह दी। वैश्विक शांति के पक्ष में, गांधी ने निम्नलिखित सलाह दी:

प्रत्येक राष्ट्र के शांति कार्यकर्ताओं को अपनी सरकारों पर पूर्ण निरस्त्रीकरण के लिए दबाव डालना चाहिए जिसके लिए एक मजबूत जनमत की आवश्यकता है; निरस्त्रीकरण के मूल सिद्धांतों का सभी देशों द्वारा सम्मान किया जाना चाहिए; यदि राष्ट्र वास्तव में शांति के लिए प्रेरित करते हैं, तो उन्हें अहिंसा के सिद्धांतों पर स्वयं का निर्माण करना चाहिए।

© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 09 , Issue : 04 | July - September 2023

महात्मा गांधी के विचार विश्व शांति के लिए: एक नयी दृष्टि

विश्व शांति के महत्व को देखते हुए, महात्मा गांधी ने अपने विचारों के माध्यम से एक नयी दृष्टि दी है। उन्होंने विश्व के लोगों को अपनी ज़िम्मेदारी के प्रति जागरूक करने का संदेश दिया था। उन्होंने कहा था कि हम सभी विश्व के नागरिक हैं और हमें अपनी ज़िम्मेदारियों का संचालन करना चाहिए। गांधी ने सत्याग्रह अभ्यास की विधि को आगे बढ़ाते हुए, सभी लोगों को सम्मान और समानता के साथ रहने की अपील की। उन्होंने अहिंसा को विश्वव्यापी शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया, जो विश्व शांति के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है।गांधी ने बताया कि विश्व शांति के लिए हमें दूसरों के साथ सहमति के साथ रहना होगा। उन्होंने बताया कि समाज में संघर्ष से नहीं, विवेक से समस्याओं का समाधान होता है। गांधी ने विश्व के लोगों को समझाया कि वे आत्मनिर्भर और स्वतंत्र होने की ज़रूरत है। उन्होंने विश्व के लोगों को अपनी आवश्यकताओं के अनुसार सम्पूर्ण बनाने का संदेश दिया था। उन्होंने विश्व के लोगों को अपने आस-पास के संसाधनों का सही उपयोग करने की अपील की। उन्होंने विश्व के लोगों को उन्नति के रास्ते पर आगे बढ़ने के लिए स्वयं अपनी शिक्षा का ज़िम्मा लेने की अपील की।

गांधी ने संघर्ष के बजाय सहमति को बढ़ावा दिया। उन्होंने इस बात को बताया कि विश्व शांति के लिए हमें एक-दूसरे के साथ समझौते करने की आवश्यकता है और समस्याओं के समाधान के लिए सहयोग करना होगा।गांधी ने विश्व को एक नयी दृष्टि देने के साथ-साथ उन्होंने अपने जीवन का भी एक महत्वपूर्ण उदाहरण दिया है। उनके अहिंसा, संयम, और सत्य के आधार पर आचरण, वे विश्व में एक सम्मानित व्यक्ति बने हुए हैं। वे भारत और विश्व के लोगों के दिलों में एक महापुरुष के रूप में स्थापित हो गए हैं।

वैश्विक शांति के लिए गांधी का दृष्टिकोण:

गांधी मूलतः एक शांतिप्रिय व्यक्ति थे। उन्होंने महान उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए साधनों की शुद्धता पर बल दिया। उनका मानना है कि हिंसा, युद्ध और दमन के माध्यम से वास्तविक और स्थायी शांति कभी हासिल नहीं की जा सकती। उनका कहना है कि हिंसा क्रोध, घृणा, दुर्भावना, शत्रुता और स्वार्थ से उत्पन्न होती है। हिंसा प्रतिहिंसा पैदा करती है, और यह अपने आप में एक कानून बन जाती है। हिंसा के माध्यम से शांति अधिक से अधिक एक युद्धविराम हो सकती है, लेकिन यह स्थायी शांति नहीं हो सकती। हिंसा और युद्ध का अंत मानव जीवन और संपत्ति के भारी विनाश में होता है। प्रेम, करुणा, सद्भावना, सहयोग, सद्भाव और निःस्वार्थता से अहिंसा की उत्पत्ति होती है, वास्तविक और स्थायी शांति अहिंसक साधनों से ही सुनिश्चित की जा सकती है।

गांधी का मानना है कि शांति के लिए शांति एक अर्थहीन सामाजिक लक्ष्य है, जब तक कि इसे सामाजिक समानता, आर्थिक न्याय और मानवाधिकारों से नहीं जोड़ा जाता। वह कहते हैं कि भूखे आदमी को सिद्धांत से नहीं खिलाया जा सकता है। इसलिए पूरी दुनिया में मेहनतकश जनता की सामाजिक परिस्थितियों को बदलकर ही शांति हासिल की जा सकती है। वह कभी भी शांति को संघर्ष

ISSN : 2454 – 308X | Volume : 09 , Issue : 04 | July - September 2023

की अनुपस्थिति नहीं, बल्कि उसका सामना करने की क्षमता मानते हैं। चूँकि शांति हमारे मन और हृदय में शुरू होती है, एक ओर व्यक्तियों का नैतिक उत्थान और दूसरी ओर एक न्यायसंगत सामाजिक व्यवस्था वैश्विक शांति प्राप्त करने के लिए आवश्यक आवश्यकताएँ हैं।

निष्कर्ष:

परमाणु हथियारों के युग में, हमारे पास एक विकल्प है - एक साथ रहना या एक साथ मरना। परमाणु हथियारों के आविष्कार ने प्राचीन सत्य को सामने ला दिया है - कि आम आपदा के आसन्न होने की तुलना में कुछ भी लोगों को एक साथ जल्दी से स्वागत नहीं करता है। परमाणु हथियारों से लैस दुनिया के लिए अहिंसक तकनीक ही एकमात्र समाधान नजर आता है। मनुष्य अपने रचनात्मक तर्क और तर्कसंगत निर्णय के साथ हिंसा और युद्ध का सहारा लिए बिना मौजूदा संस्थानों और रीति-रिवाजों को बदलने के तरीके और साधन खोजने की क्षमता रखता है।

गांधीवाद आज की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं को हल करने के लिए एक जीवित विचार है। प्रत्येक क्षेत्र में नैतिक सिद्धांतों की प्रासंगिकता के कारण समय बीतने के साथ यह अधिक से अधिक प्रासंगिक होता जा रहा है। वैश्विक शांति और एक न्यायपूर्ण समाज को बढ़ावा देने की दिशा में उन्होंने दुनिया भर के लोगों को जो अद्वितीय रास्ता दिखाया है, उसके लिए गांधी को भविष्य में भी याद किया जाता रहेगा। गांधी ने सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों के आधार पर एक गैर-श्रेणीबद्ध, गैर-भौतिकवादी, गैर-साम्राज्यवादी और गैर-जातिवादी वैश्विक व्यवस्था बनाने की मांग की। इसलिए उन्हें शांति के दूत के रूप में वर्णित किया गया है।

संदर्भ:

1. सी.डब्ल्यू.एफ. हेगेल "फिलॉसफी ऑफ राइट", टी. एम. नॉक्स द्वारा अंग्रेजी अनुवाद, (लंदन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1953)।
2. मोहम्मद अख्तर खान (1995) मॉडर्न इंडियन पॉलिटिकल थॉट: संजय प्रकाशन, दिल्ली
3. डॉ. जी. रंजीत शर्मा: (1995): एन इंट्रोडक्शन टू गांधीयन थॉट: अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स: दिल्ली
4. एम. के. गांधी, "हरिजन", 28-07-1960
5. एम. के. गांधी, "यंग इंडिया", 21-10-1926, पृष्ठ.3,363
6. महात्मा गांधी, 'हिंद स्वराज्य', नवजीवन प्रकाशन, 2009
7. महात्मा गांधी, 'सत्यार्थ प्रकाश', नवजीवन प्रकाशन, 2010
8. महात्मा गांधी, 'हरीजन एक्स्प्रेस', नवजीवन प्रकाशन, 2006
9. रोमेष तिवारी, 'महात्मा गांधी के दर्शन', राजकमल प्रकाशन, 2012
10. भारत गोविंद शर्मा, 'गांधी का दर्शन', प्रेम प्रकाशन, 2009